ISSN: 2395-2873

महादेवी वर्मा के काव्य की विशेषताएं - प्रा. डॉ. विष्णु गोविंदराव राठोड

महादेवी वर्मा छायावाद की कवयित्री है। उनके के काव्य में रहस्यवाद दिखाई देता है इसलिए महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा कहा जाता है। अतः उनके काव्य में आत्मा परमात्मा के मिलन, विरह तथा प्रकृति के कार्यव्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वेदना और पीड़ा महादेवी के काव्य के प्राण रहे। महादेवी का समस्त काव्य पीड़ा भरा है। महादेवी वर्मा को पीडवाद और रहस्यवाद की कवयित्री कहा जाता है। वह स्वयं लिखती है," दुख मेरे जीवन निकट का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एकसुत्र में बांधने की अपूर्व क्षमता है। मीरा के काव्य में वर्णित वेदना लौकिक वेदना से अलग अध्यात्मिक वेदना है। उसी लिए सहज और सवेज्ञ हो सकती है,जिसमें उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया हो। वैसे महादेव वर्मा उस वेदना को,उस दुख की संज्ञा देती है, जो सारे संसार को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता हो।" 1 किंतु विश्व को एक सूत्र में बांधने वाला दु:ख सामान्यतः लौकिक दु:ख ही होता है जो भारतीय साहित्य की परंपरा में करूणरस का स्थायीभाव होता है। महादेवी वर्मा ने इस दु:ख को नहीं अपनाया है। वह कहती है," मुझे दोनों ही दु:ख के रूप प्रिय है,एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील मन को सारे संसार से एक अविच्छिन्न बंधनों में बांध देता है,और दूसरा वह जो काल और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतना का कृदंत है।"2 महादेवी के काव्य में पहले प्रकार का नहीं दूसरे प्रकार का कृदंत ही अभिव्यक्त हुआ है। संभवतः इसलिए रामचंद्र शुक्ल ने उनकी सच्चाई में ही संदेह व्यक्त करते हुए लिखा है," इस वेदना को लेकर उन्होंने रद्द हैं कि ऐसी अनुभूतियां सामने रखी जो लोकोत्तर है, कहां तक वे वास्तविक अनुभूतियां है और कहां तक अनुभूतियों की रमणीय कल्पना यह नहीं कहा जा सकता।"3 इसी आध्यात्मिक वेदना की दिशा में प्रारंभ से अंत तक महादेवी के काव्य की सुख और विस्तृत भाव अनुभूतियों का विकास और प्रसार दिखाई पड़ता है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी तो उनके काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य पीड़ा से भी बढ़कर मानते हैं।

महादेवी वर्मा समस्त मानव जीवन को निराशा और व्यथा से परिपूर्ण रूप में देखती थी। वह अपने को नीर भरी दुख की बदली कहती थी," मैं नीर भरी दुख की बदली, विस्तृत नभ का कोई कोना, मेरा न कभी अपना होना ,परिचय इतना इतिहास यही, उमड़ी थी कल मिट आज चली।"

महादेवी वर्मा के प्रेम वर्णन में ईश्वरीय विरह की प्रधानता है। उन्होंने आत्मा की चिरंतन विकेता और ब्रह्म से मिलने की आतुरता के बड़े सुंदर चित्र संजोए हैं। वह कहती हैं,

"मैं कन कन में डाल रही अली आंसू के मिल प्यार किसी का।

मैं पलकों में पाल रही हूं यह सपना सुकुमार किसी का।"

"अग्नि रेखा " में दीपक को प्रतीक मानकर अनेक रचनाएं लिखी गई है। साथ ही अनेक विषयों पर भी कविताएं है , महादेवी वर्मा का विचार है कि अंधकार से सूर्य नहीं दीपक बुझता है। वह कहती है,

" रात के इस सघन अंधेरे में जूझता सूर्य नहीं जूझता रहा दीपक,